

अखण्ड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज

शनिवार 16 दिसंबर 2023

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेट

भजनलाल शर्मा ने ली राजस्थान के मुख्यमंत्री पद की शपथ

दिया कुमारी और डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने उप मुख्यमंत्री के रूप में ली शपथ

दिव्यांग पूर्व वायुसेना
अधिकारी के साथ
झाइवर ने किया
दुर्व्यवहार, ओला कैब
कंपनी को नोटिस
नई दिल्ली। मुख्य आयुक्त
(दिव्यांग वर्किंग) को दिल्ली ने
ओला कैब के एक झाइवर द्वारा
80 प्रतिशत लोकमोटर दिव्यांगता
वाले पैरा शुटर, बिंग कमांडर
शांतनु के साथ किए गए दुर्व्यवहार
के संदर्भ में ओला कैब कंपनी को
नोटिस जारी किया है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता
मंत्रालय ने शुक्रवार को एक बयान
जारी कर यह जानकारी दी। इसमें
कहा गया है कि वायुसेना के पूर्व
अधिकारी शांतनु सिंह ने
सीसीपीडी में की गई अपनी
शिक्षण की बायान किया कि 12
दिसंबर को बायान के लिए रेंज
से थोड़ी दूरी की बायान करने के
लिए उन्होंने एक ओला कैब बुक
की, जहां वह पहले खेलों डिल्या
पैरा गेम्स में भाग लेने के लिए 3
किलोमीटर दूर एक स्थान पर आए
थे।

शांतनु सिंह की पत्नी ने कैब के
झाइवर से बूट स्प्येस में सीएनजी
किट लाई होने के कारण फॉलोडे
व्हीलचेयर को पिल्ली सीट पर¹
खेलने का अनुरोध किया लिंकिन
कैब झाइवर से उन्हें एसा करने से
मना कर दिया। इसके अलावा
कैब झाइवर ने वायुसेना के पूर्व
अधिकारी की पत्नी के साथ
दुर्व्यवहार किया और शांतनु सिंह
और उनकी पत्नी को कैब से उत्तर
जाने को कहा।

पिटाई का बदला लेने
के लिए नाबालिगों ने
रची हत्या की साजिश

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के
मालवीय नगर इलाके में पिटाई का
बदला लेने के लिए छह नाबालिगों
ने मिलकर एक 17 वर्षीय लड़के
की हत्या कर दी। जानकारी के
अनुसार, आरोपितों ने मृतक को
शराब पिलाने के बाहने बुलाया,
फिर चाकू और ईंट से बायान कर
उसकी हत्या कर दी। पुलिस ने इस
मालके में तीन नाबालिगों को
पकड़ लिया है। बाकी फरार तीन
नाबालिगों की पुलिस तलाश कर
रही है। हत्या में इत्तमाल दो चाकू
भी बरामद कर लिये गये हैं।

बताया जा रहा कि मृतक पर कई²
बायान चाकू से हमला किया गया
था। डीसीपी चंदन चौधरी ने
बताया कि शुक्रवार सुबह करीब
7:30 बजे मालवीय नगर पुलिस को
सुचना मिली कि खिड़की
एक्सीसेंसिंथित सतपुला पाक में
एक लड़के का शव पड़ा हुआ है।

प्रख्यात संगीतकार अनूप
घोषाल का निधन, मुख्यमंत्री ने
जताया शोक



कोलकाता
प्रख्यात संगीतकार एवं गायक डॉ.
अनूप घोषाल का शुक्रवार को 78
वर्ष की उम्र में निधन हो गया।
शुक्रवार दोपहर बाद उन्होंने
आखिरी सास ली।
मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने उनके
निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया
है। सोशल मीडिया पर ममता ने
लिखा है कि प्रख्यात संगीतकार डॉ.
अनूप घोषाल के निधन से बहुत
दुखी हैं। उनके गाने आज भी
लोगों की जुबान पर हैं। पश्चिम
बंगाल सरकार ने उन्हें 2011 में
"नजरूल स्मृति पुस्कार" और
2013 में "संगीत महासमान" से
सम्मानित किया। अनूप घोषाल
का निधन संगीत जगत के लिए
एक अपूरणीय क्षति है। अनूप

घोषाल के रिश्तेदारों और
प्रशंसकों के प्रति मेरी हार्दिक
संवेदन।

उल्लेखनीय है कि अनूप मुख्यतः
नजरूल गीत के लोकप्रिय गायक
थे। उन्होंने चार साल की उम्र में
संगीत सांख्या शुरू किया था और
26 साल की उम्र तक संगीत
सीधी। नजरूल गीत के अलावा
टुमरी, खाल, भजन, रागप्रधान,
रवीन्द्र संगीत, द्विजेन्द्र गीत,
रजनीकांत के गीत, आधुनिक
बांगन गीत और लोकगीतों में
उन्होंने अपनी विशेष छाँड़ी।
उनके संगीत मुकुट में संगीताचार्य
तारापद चुक्रवर्गी में, संगीताचार्य
महान देवब्रत विश्वास, मणिंद्र
चक्रवर्ती जैसे दिग्गज शामिल हैं।



ओमान के सुलतान हैथम बिन तारिक तीन दिवसीय राजकीय यात्रा पर दिल्ली पहुंचे



जगदीप धनखड़ उनसे मिले।
इसके बाद सुलतान रास्ता पर भवन
में राष्ट्रपति द्वारा पूर्ण सुलाकाश
करेंगे। सुलतान हैथम बिन तारिक
की भवतीली राजकीय यात्रा करेंगे।

यात्रा है। मंत्रालय के अनुसार

प्रधानमंत्री के साथ हिंदूशी चर्चा

के बाद उनके सम्मान में दोपहर

भोज का भी आयोजन किया

जाएगा।

यात्रा की भवतीली राजकीय

यात्रा है। और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई। कार्बाई में श्रम

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग से हुई।

आंदोलन के नाम से भी जाना

जाता है और बाल विकास धराएं

सहयोग स

संपादक की कलम से

ਸਥ ਕੁਛ ਧੁੰਧਲਾ ਹੈ

सब कुछ धूंधला है, धूंधला है, मैं सारे ये गम भूला के थूम रहा, ये गीत पिछले साल आए एक अलबम का है और युवाओं के बीच खासा मशहूर है। इस गीत की जो शुरूआती पंक्तियाँ हैं, वो देश की सियासत और देश के भविष्य की सटीक बयानी कर रही हैं। राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर हम व्या थे, व्या बनाए जा चुके हैं और अब आगे कैसे होंगे, इस बारे में विचार करें तो वार्कइ सब धूंधला ही नजर आएगा। आज से 20-30-50 साल पहले के भारत को देखें और आज से उसकी तुलना ईमानदारी से करें तो पता चलेगा कि कैसे संविधान में वर्णित मूल्यों को बड़े शांतिराना तरीके से किनारे करते हुए हिंदुत्व की जड़ें गहरी की गईं, फिर देश में नफरत की अमर बेल फैलाई गई और अब समाज में जो स्पष्ट विभाजन हो चुका है, उसे सामान्य साबित किया जा रहा है। और इसका दोष अकेले भाजपा या संघ पर नहीं डाला जा सकता, इस देश के जितने राजनैतिक दल हैं, कांग्रेस समेत, वो सब इसमें भागीदार रहे हैं। क्योंकि अगर भाजपा ने 90 के दशक में ऐलान किया था कि मदिर वही बनाएंगे, तो बाकी दलों ने भी अपनी कमियों और कमज़ोर फैसलों के कारण यह सुनिश्चित किया कि भाजपा मदिर वहीं बनाए और केवल यहीं पर न रुके, बल्कि जम्मू-कश्मीर, मथुरा, काशी और इस तरह के तमाम मंसूबे जो नागपुर ने पाल रखे थे, उन्हें परा करके दिखाए।

पाल रखा था, उन्होंना गूता करके दिखाया। देश में पिछले 10 सालों से भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार है। ये पूर्ण बहुमत भाजपा को 2014 में 31 प्रतिशत वोट के साथ मिला और 2019 में 38 प्रतिशत वोट के साथ। कांग्रेस समेत बाकी दल यही कहकर खुश होते रहे कि भाजपा को बहुमत मिलने के बावजूद वोटे 60-70 प्रतिशत वोट हमारे पास रहे। लेकिन इन वोटों के बावजूद सत्ता वर्षों नहीं मिली, क्यों विधानसभा चुनावों में जीत नहीं मिली, इस पर कोई विचार-विमर्श नहीं किया गया। ये विचारधारा और राजनीतिक प्रतिबद्धता का धृत्यालापन है, जिसे केवल भाजपा को भला-बुरा कहकर दूर नहीं किया जा सकता। उसके लिए विषयकी दलों के पास स्पष्ट नजरिया होना चाहिए। खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि हाल में मिली विधानसभा चुनावों में हार के बावजूद अपने प्रदर्शन को लेकर कोई गंभीर मंथन कांग्रेस में दिखाई नहीं दे रहा है। अभी कांग्रेस इसी में खुश है कि भाजपा को मुख्यमंत्री तय करने में एक हास्ते से अधिक वक्त लग गया। भाजपा ने तीनों राज्यों में एकदम से नए वेहरों को लाकर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठा दिया है, तो अब भाजपा में बगावत हो सकती है, इसी ख्याल से कांग्रेस प्रसन्न हो रही है। इसी को वैचारिक दिवालियापन या प्रतिबद्धता की कंगाली कहते हैं।

ये सही बात है कि धृत्यालापन भाजपा के स्तर पर भी है। अगर दृष्टिकोण की स्पष्टता होती तो मुख्यमंत्री चयन में इतना वक्त नहीं लगता। जीते हुए विधायकों को यह तय करने दिया जाता कि उन्हें किसे विधायक दल का नेता चुनाना है। मगर सत्ता के केन्द्रीकरण के आदी हो चुके प्रधानमंत्री मोदी और उनके सिप्हसालार अमित शाह किसी भी तरह अपनी पकड़ कमजोर नहीं करना चाहते। इसलिए तीनों राज्यों में पूर्व मुख्यमंत्रियों और अन्य दिग्गजों को प्रतीक्षा की कतार में छोड़कर नए वेहरों को मुख्यमंत्री की कुर्सी सौंप दी। अब ये मुख्यमंत्री खुद को उपकृत मानते हुए आलाकमान के सामने वफादारी साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। इसके बाद लोकसभा चुनाव की सभी रीटें अपनी पार्टी के खाते में करने के लिए एडी-चॉटी का जोर लगा देंगे।

2014 के बाबू रोमांटी दर्शा तैयार किए गए तेजप्रकाश नायरों में जीत

2014 के बाद से ऐसा ही हुआ है कि लोकसभा के बाद विधानसभा चुनावों में जीत मिली, फिर विधानसभाओं के जरिए राज्यसभा में पार्टी की ताकत बढ़ी, उसके बाद मनमाने फैसले लेने में आसानी हुई, फिर दोबारा लोकसभा में जीत मिली और फिर से विधानसभा चुनावों में जीत मिली है। यही क्रम चला तो अगले चुनाव यानी 2024 में भाजपा की जीत के दावे खारिज नहीं किए जा सकते। और अगर ये दावे सही हुए तो फिर उसके बाद के विधानसभा चुनावों में जीत की संभावनाएं बढ़ जाएंगी। यानी एक जीत से दूसरी जीत का मार्ग प्रशस्त होगा। उससे भाजपा की ताकत बढ़ेगी, लेकिन क्या देश ताकतवर बन पाएगा।

• **Red** - The color of the heart, representing love and passion.

धुएं और न

बुधवार को भारत के नये संसद भवन में घुसकर धुंआ फैलाने और बाहर नारेबाजी करने के पीछे जो लोग हैं, उनमें से चार को पकड़ लिया गया है तथा कुछ की तलाश जारी है। इनसे पूछताछ से मुख्यतः जो बात सामने आई है, उससे प्रथम व्यष्ट्या यही प्रतीत होता है कि उनका मकसद कोई बड़ी घटना को अंजाम देना नहीं था, वरन् जनता की कतिपय समस्याओं की ओर देश की सबसे बड़ी पंचायत का ध्यान आकृष्ट करना था। यह तो माना जा सकता है कि युवाओं द्वारा अपनी बात को थोड़ा सनसनीखेज तरीके से जरूर उठाया गया है, लेकिन इसके बरक्स दो बातें सामने आई हैं-पहली तो यह कि करोड़ों रुपयों से निर्मित नये संसद भवन की सुरक्षा व्यवस्था अत्यंत लचर है; और दूसरी बात है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हमेशा की भाँति चुप्पी। इस हादसे ने साबित कर दिया है कि देश के साथ बड़ी से बड़ी बात हो जाये, मोदी अपना मौन व्रत करकि नहीं तोड़ेंगे। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं ही एक बड़ी खबर है।

संसद भवन के रहते, वह भी ठीक-ठाक हालत में होने के बावजूद इस नये भवन को बनवाना एक बड़ी फिजूलाखर्ची है। बाद में यह बात साफ होती चली गई कि इसका उद्देश्य पुराने भवन के साथ नव्यी देश के स्वतंत्रता संग्राम की विरासत को मिटाना है। खासकर, उस भवन पर पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जो सुखद छांव बनी हुई थी, वह मोदी को उनकी विचारधारा के कारण कड़ी धूप सी प्रतीत होती थी। इसी क्रम में उन्होंने नेहरू के शासकीय निवास तीन मूर्ति भवन को भी प्रधानमंत्रियों के संग्रहालय में बदलवा दिया। नेहरू विरोध के अलावा मोदी नये भवन का 2024 के लोकसभा चुनाव के लिये भी इस्तेमाल करना चाहते हैं। बहरहाल, इस भवन के बारे में दावा किया गया था कि इसकी सुरक्षा बड़ी पुख्ता है। विशेषकर 13 दिसम्बर, 2001 को पुराने भवन पर हुए आतंकी हमले के मद्देनजर इसकी जरूरत भी थी।

वरन एक हृद तक शमनाक भी है। नया संसद भवन मोदी का ड्रीम प्रोजेक्ट रहा है। देश में जब कोविड-19 का भीषण प्रकोप था तथा देश को महामारी से लड़ने के लिये बड़ी धन राशि की आवश्यकता थी, तब इसका निर्माण किया गया था। मोदी खुद इसकी प्रगति देखने आते रहते थे। उस समय इस बात का यह कहकर विरोध हुआ था कि पुराने इस भवन के उद्घाटन के अवसर पर बुलाय गये विशेष सत्र को छोड़ दें तो यही इसका नियमित सत्र (शीतकालीन) है, जो अब भी जारी है। पहले ही सत्र में, वह भी ठीक उसी दिन- 22 वर्षों के बाद इसकी सुरक्षा व्यवस्था की पोल कुछ निहत्ये युवाओं ने खोलकर रख दी। उनके कृत्य को कतई समर्थन नहीं मिल रहा है परन्तु इसमें कोई शक नहीं रह जाना

यूजीसी और एनसीईआरटी का

- राम पुनियानी

नवी शिक्षा नीति (एनईपी) हमारी शिक्षा व्यवस्था के ढांचे और स्वरूप में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाली है। सरकार द्वारा नियमित रूप से ऐसे निर्देश जारी किये जा रहे हैं जिनसे निवारणियों के प्रयोग-प्रदिक्षण में बिन्दु सबके सामने हैं। इंडी, आयकर विभाग और सीबीआई ने विपक्षी पार्टियों के खिलाफ वह सब कुछ किया, जो बे कर सकती थीं। कई मौकों पर चुनाव आयोग की भूमिका भी निष्पक्ष नहीं रही है। इस बीच, गतिमी और प्रभारी अपनी शिक्षा

जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते तापमान से जुड़े जीवनी खतरे



स्वास्थ्य चर्चा के केंद्र में होना और निर्णय निमार्ता कॉप 28 में समाप्त होता है।

चाहिए। डब्ल्यूएचओ का मानना है कि सम्मेलन को जलवायु संकट से निपटने के लिए शमन, अनुकूलन, वित्तपोषण और सहयोग के चार प्रमुख लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हमारा ध्यान जलवायु संकट से स्वास्थ्य को होने वाले खतरे एवं जलवायु कार्रवाई से होने वाले स्वास्थ्य लाभ पर केंद्रित होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन पहले से ही लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है और जब तक तत्काल कार्रवाई नहीं की जाएगी, तब तक यह तेजी से बढ़ता रहेगा। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक डॉ टेंड्रेस अद्योत घेब्रेयसस ने कहा कि जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में लाखों लोगों को बीमार या बीमारी के प्रति अधिक असरदार बना रहा है। बढ़ते तापमान की घटनाओं की बढ़ती विनाशकरिता गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोगों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। कुपोषित व स्वास्थ्य सेवाओं से विचित महिलाओं में जलवायु परिवर्तन के कारण मलेरिया, हैजादस्त, डेंगू जैसे रोगों की आशंका कहीं अधिक रहती है। यह महत्वपूर्ण है कि बातचीत के केंद्र में स्वास्थ्य को रखने के लिए नेता साथ आएं। हमारा स्वास्थ्य हमारे आस-पापारिस्थिती के तंत्र के स्वास्थ्य निर्भर करता है, ये पारिस्थितिक अब वनों को काटे जाने, और भूमि उपयोग में बदलाव, प्लास्टिक प्रयोग तथा तेजी से वृश्चकरी विकास के चलते खाली हैं। जानवरों के आवासों अतिक्रमण अब मनुष्यों के हानिकारक विषाणुओं संक्रमण अवसरों को बढ़ा रहा है। 2030-2050 के बीच, जलवायु परिवर्तन से कुपोषण, मलेरिया, डांगरा और गर्भी के तानाव से हर लगभग ढाई लाख अतिरिक्त हो सकती हैं। वर्तमान जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन परिप्रेक्ष्य में कृषि उत्पादकता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। मौसम में बदलाव अल्पकालिक घटनाओं दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन प्रभाव के कारण धान, मक्का गेहूं की पैदावार प्रभावित हो सकती है। और पाया गया कि तापमान नकारात्मक प्रभाव लम्बे समय तक लगता है। अल्पावधि में अल्पकालिक घटनाओं में बदलाव की बार-बालंगी की विवरण दिए गए हैं।

और निर्णय निमार्ता कॉप 28 में एक रही चरम घटनाएं फसल की

साथ आए। हमारा स्वास्थ्य हमारे आस-पास के पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है, ये पारिस्थितिकी तंत्र अब बनों को काटे जाने, कृषि और भूमि उपयोग में बदलाव, बढ़ते प्लास्टिक प्रयोग तथा तेजी से हो रहे शहरी विकास के चलते खरों में हैं। जानवरों के आवासों में अतिक्रमण अब मनुष्यों के लिए हानिकारक विषाणुओं संक्रमण के अवसरों को बढ़ा रहा है। 2030 से 2050 के बीच, जलवायु परिवर्तन से कुपोषण, मलेरिया, डायरिया और गर्भी के तनाव से हर साल लगभग ढाई लाख अतिरिक्त मौतें हो सकती हैं। वर्तमान जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में कृषि उत्पादकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। मौसम में बदलाव की अल्पकालिक घटनाओं तथा दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण धान, मक्का और गेहूं की पैदावार प्रभावित हो रही है और पाया गया कि तापमान का नकारात्मक प्रभाव लम्बे समय की तैलना में अल्पावधि में अधिक होता है। जलवायु परिवर्तन और मौसम में बदलाव की बार-बार हो पैदावार पर कहर बरपा रही है और किसानों को अपनी फसलों के नुकसान को सीमित करने के अनुकूल उपाय करने के लिए मजबूर कर रही हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित और नियंत्रित करने के लिए जरूरी है कि भारत दर्शन एवं संस्कृति में इसका समाधान खोजें भारतीय परम्परा एवं धार्मिक कृत्यों एसे-ऐसे विधि-विधान एवं प्रावधान द्वारा है जो जलवायु संकट से मुक्ति दिलाने में सक्षम है। भारत में धार्मिक कृत्यों में वृक्ष पूजा का महत्व मिलता है। पीपल को पूज्य मानकर उसे अटल सुहाग से सम्बद्ध किया गया है, भौजन में तुलसी का भोग पवित्र माना गया है, जो कई रोगों की रामबाण औषधि है। बिल्व वृक्ष को भगवान शंकर से जोड़ा गया और ढाक, पलाश, द्रवीर एवं कुश जैसी वनस्पतियों को नवग्रह पूजा आदि धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया। पूजा के कलश में सप्तनदियों का जल एवं सप्तभृतिका का पूजन करना व्यक्ति-व्यक्ति में नदी व भूमि को पवित्र बनाए रखने की भावना का संचार करता था। सिद्धु सभ्यता की मोहरों पर पशुओं एवं वृक्षों का

अंकन, सप्ताटों द्वारा अपने राजचिन्ह के रूप में वृक्षों एवं पशुओं को स्थान देना, गुप्त सप्ताटों द्वारा बाज को पूर्ण मानना, मार्गों में वृक्ष लगवाना, कुएं खुदवाना, दूसरे प्रदेशों से वृक्ष मगवाना आदि तात्कालिक प्रयास पर्यावरण प्रेम को ही प्रदर्शित करते हैं। ह्यपानी और प्रेम को खरीदा नहीं जा सकताहूँ जैसी कहावत हमारे यहाँ प्रचलित रही है। ह्यारहिमन पानी रखिये बिन पानी सब सूनल जहाँ इस उक्ति में पानी इज्जत और मान मर्यादा का प्रतीक बन पड़ा है, वही आज के इस पर्यावरणीय संकट में पानी के शाब्दिक अर्थ को ही बचा पाए तो हम रहीम के दोहे के साथ न्याय कर पाएंगे। यह तो केवल एक बानी है जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते तापमान से हो रहे प्रकृति के विनाश के प्रति चिंता की।

जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते तापमान के लिये बढ़ता प्लास्टिक का प्रचलन भी बड़ा कारण है। वैज्ञानिकों ने कहा है कि प्लास्टिक प्रदूषण बहुत बड़ी समस्या है। किंतु माइक्रो प्लास्टिक की समस्या तो उससे भी कहीं ज्यादा भयानक समस्या बनती जा रही है। माइक्रो प्लास्टिक से विश्व भर के महासमुद्रों में पैदा हो रहा प्रदूषण आने वाले समय में बहुत विकट समस्या साधित होगा। यह समस्या इतनी विकट-विकराल होगी, जो सदियों तक मानव जीवन को प्रभावित करती रहेगी। विश्व की आबादी प्रतिवर्ष लगभग अपने वजन बराबर प्लास्टिक उत्पन्न करती है। प्रतिष्ठित अमेरिकी जर्नल साइंस में प्रकाशित वर्ष 2015 के एक वैश्विक अध्ययन के मुताबिक दुनिया के 192 समुद्र तटीय देशों में तकरीबन साढ़े सत्ताइस करोड़ टन प्लास्टिक कचरे का उतापन हुआ, जिसमें से बड़ी मात्रा में प्लास्टिक कचरा महासमुद्रों में प्रविष्ट हो गया। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आकलन अनुसार प्रतिवर्ष प्रयोक्ता भारतीय तकरीबन आठ किलोग्राम प्लास्टिक का उपयोग करता है। इसका निष्कर्ष यही हुआ कि भारत खिलाफ जनजागृति होना जरूरी है। भारतीय दर्शन, जीवन शैली, परंपराओं और प्रथाओं में प्रकृति की रक्षा करने का विज्ञान छुपा है। आवश्यकता दुनिया के सामने इसकी व्याख्या करने की है। जब तक हम भारतीय दर्शन के अनुरूप जीवनशैली नहीं अपनायेंगे तब तक ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। इसलिये प्रकृति की रक्षा करने वाली परंपराओं और संस्कृति को पुनर्जीवित करने की जरूरत है। विदित हो कि पर्यावरण को लेकर भारतीय ज्ञान पूरी तरह वैज्ञानिक है। हमें लालच छोड़ने, पृथ्वी को नष्ट नहीं होने देने और आवश्यकता के अनुरूप प्रकृति के संसाधनों का उपभोग करने का संकल्प लेने से ही ग्लोबल वार्मिंग का समाधान मिलेगा।

(ललित गर्ग)

लेखक, पत्रकार एवं स्तंभकार
ई-253, सरस्वती कुंज
अपार्टमेंट
25 आई पी एक्सटेंसन,
पटपड़गंज
दिल्ली-110092
फोन:-22727486, मोबाइल:-
9811051133

धुएँ और नारों पर मोन मोटी



चाहिये कि इस भवन की सजावट पर तो खूब ध्यान दिया गया है, लेकिन सुरक्षा की बुनियादी आवश्यकता पूरी तरह से नजरंदाज को गई है। दो दशक पूर्व हुए हमले में तो जांबाज सुरक्षाकर्मियों ने आतंकवादियों को संसद भवन में घुसने तक नहीं दिया था। अबकी एक नहीं

दो लोग दर्शक दीर्घा से सदन के बीचों-बीच कूद पड़ते हैं और बाकायदा एक से दूसरी बीचों को फलांगने में भी सफल हो जाते हैं। इनमें से एक युवक ने अपने जूते में छिपाकर लाये केन स्प्रे से पीला धूंआ भी फैलाया। यानी वे कोई हथियार भी ला सकते थे। वे अगर

यूजीसी और एनसीईआरटी का हिन्दू राष्ट्र शैक्षणिक कार्यक्रम



धमकाने का अभियान शुरू किया। इन आंदोलनों के नेताओं पर राष्ट्रद्वेषी का लेबल चस्पा कर दिया गया। तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरणी ने प्रस्तावित किया कि प्रत्येक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रांगण में एक बहुत ऊचे खम्बे पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाए। वह भी प्रस्तावित किया

पंसंथापक दत्ताजी दिवोलकर की जन्म शताब्दी को मनाने के लिए एक साल तक चलने वाले आयोजनों में विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। एक हिन्दू राष्ट्रवादी को राष्ट्रनायक का दर्जा देने का इस प्रयास का फोकस महाराष्ट्र के कॉलेजों पर है। क्या हिन्दू राष्ट्रवादी नेताओं को जीतीरो बनाने का यूजीसी का यह प्रयास उचित है? क्या हमें उन नायकों को धारा 37 नहीं करना चाहिए जो भारतीय राष्ट्रवाद के हाथी थे और जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के खेलाफ संग्राम का नेतृत्व किया था? अरएसएस से जुड़े दिवोलकर न तो वाचाधीनता संग्राम का हस्ता थे और उन्होंना ही वे भारतीय सर्विधान के मूल्यों में आस्था रखते थे।

यूजीसी ने एक और सुकुलर जारी करका है कि कॉलेजों में 'सेल्फी पॉइंट' बनाए जाने चाहिए जिनकी प्रश्नभित्र में

जमू-कश्मीरः सत्यमेव जयते

सामवर (11 दिसंबर) का सर्वोच्च न्यायालय ने धारा 370-35ए का बहाल करने संबंधित 23 याचिकाओं पर अपना फैसला सुना दिया। पांच न्यायाधीशों की सविधान खंडपीट ने एकमत होकर मोदी सरकार द्वारा 5 अगस्त 2019 को उपरोक्त धाराओं के सर्वैधानिक क्षरण को न्यायोचित बताया। अदालत के विस्तृत फैसले का मर्म यह है कि धारा 370 एक अस्थायी प्रावधान था, जम्मू-कश्मीर के पास कोई आंतरिक संप्रभुता नहीं थी, राष्ट्रपति को धारा 370-35ए हटाने का अधिकार था और लद्दाख को अलग करने का निर्णय भी वैध था। इस पृष्ठभूमि में देश का एक राजनीतिक-वैतारिक वर्ग, जोकि इन धाराओं का प्रत्यक्ष-परोक्ष समर्थक है— वह अदालत के फैसले से बहाता है और उसे ह्यामौत की सजाल बता रहा है। वास्तव में, शीर्ष अदालत का निर्णय राष्ट्रीय विचारधारा की भी विजय है, जिसने दशकों तक देश के एकीकरण हेतु, राष्ट्रहित के लिए और जिहादी-वामपंथी दर्शन के खिलाफ सतत संघर्ष किया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनसंघ (अब भजपा) प्रारंभ से धारा 370-35ए के खिलाफ आंदोलित रहे हैं। जहां नवंबर 1947 में संघ के प्रारंभिक वितकों में से एक— बलराज मधोक ने प्रजा परिषद की स्थापना करके जम्मू-कश्मीर को मिले विशेषधिकार का विरोध किया, तो जनसंघ के संस्थापक डॉ. शयमा प्रसाद मुखर्जी ने हळके देश में दो निशान, दो विधान नहीं चलनेवाली चलेंगे नारा देकर भारत में जनजागरुकता अभियान चलाया। इसी दौरान वर्ष 1953 में डॉ. मुखर्जी कश्मीर में गिरफ्तार कर लिए गए और पुलिस हिरासत में अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। उसी वर्ष से आरएसएस अबतक 27 संकल्प-पत्र पारित कर चुका है, जिसमें इन धाराओं से विट्टन-अलगाव को बढ़ावा, तो प्रशांतारा को प्रोत्साहन मिलने की बात कही गई और जम्मू-कश्मीर को एक संघ शासित प्रदेश में बदलने का आग्रह आदि भी किया गया। इस दिशा में आरएसएस का अतिम संकल्प वर्ष 2020 में आया था, जिसमें 5 अगस्त 2019 को धारा 370-35ए का सर्वैधानिक क्षरण

चित्रकूट संदेश

समय सीमा से पूरे कराये पर्यटन विकास कार्यःडीएम इमारत ढहने पर व्यापारी नेताओं ने नहीं जताया विरोध

पचास लाख लागत से
अधिक निर्माण कार्यों
की हुई समीक्षा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अधिकारी अनन्द ने पचास लाख से अधिक लागत के निर्माण कार्यों एवं रुक्मिणी सीमा पर दोलेन व चार लेन मार्ग पर गेट व प्रकाश व्यवस्था, पुलों के निर्माण, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बगरगढ़ निर्माण, सकिंठ लाइस बगरगढ़ निर्माण, नवीन थाना सरधुआ, विकास भवन निर्माण, ड्राइटर हॉस्टल निर्माण, राजकीय पालिट्रिनिक मानिकुपुर, इगा वेरबाहुउंग, नार पंचायत भवन मक्का निर्माण, नवीन संकेत जनिन्ह वाहिकूल निर्माण, पर्यटन विकास कार्य, राजकीय आईटीआई, तुलसीदास जन्मस्थली राजापुर के



निर्माण कार्यों की समीक्षा करते डीएम।

परिक्रमा मार्ग पर्यटन विकास, पथ प्रकाश व्यवस्था, बाल्यांक आश्रम में सांस्कृतिक केंद्र भवन निर्माण, जिला चिकित्सालय में अभियान, चैपडा तालाब का सुन्दरीकरण, भरतकूप मर्दार पर लाइट, श्रीराम लाइन आदि स्थानों पर बैरक एवं बहुस्तर निर्माण, नवीन संकेत जनिन्ह वाहिकूल निर्माण, पर्यटन विकास कार्य, राजकीय आईटीआई,

पर्यटन विकास कार्य, रुद्धियन आश्रम, दशरथ घाट पर्यटन विकास, राजकीय इंटर कॉलेज अशोह निर्माण, मारकुंडी, रैपुरा, पहाड़ी, बहिलपुरगा, कातवाली कर्वा, बरगढ़, मानिकुपुर, पुलिस लाइन आदि स्थानों पर बैरक एवं बहुस्तर निर्माण, नवीन संकेत जनिन्ह वाहिकूल निर्माण, पर्यटन विकास कार्य, राजकीय आईटीआई,

अध्यक्षता करते हुए कार्यदाइ संस्थाओं के अधिकारियों की निर्देश दिए, कि जिले में जो भी निर्माण कार्य हो रहे हैं, शासन की मंशानुसार समय सीमा के भीतर पूरे करायें। जिन कार्यदाइ संस्थाओं के कार्यों की अभी सीधेआईएस पर फॉर्मिंग नहीं हुई, एक सालाह में करायें। रुद्धियन निर्माण कार्यों पर कहा गया वार्षिक शाखा है, उन्हें तत्काल पूरे कराकर संबंधित विभागों को होंड ओवर करायें।

बैठक में सीडीओ अमुलपाल कौर, सीडीओ अमेवर सुशील श्रीवास्तव डॉडीओ आजेक नियांती, सीधेआईएस डॉ सुरी कुमार, सीडीओ डॉ भुवष चंद्र, एक्सट्रीम लॉनिंग प्रतीत खंड सल्लैंद्र नाथ, निर्माण खंड अंतर्गत कुमार, अवास विकास कार्यालय लॉनिंग राजकमल, डॉ शुभेश वार्ड मेम्बर सुशील श्रीवास्तव ने बताया कि नगर पालिका के पूर्व वार्ड मेम्बर सुशील श्रीवास्तव ने बताया कि नगर पालिका के चयनित वार्ड मेम्बरों ने भी ऐतिहासिक इमारत ढहाने का विरोध नहीं जताया।

शुक्रवार को नगर पालिका के पूर्व वार्ड मेम्बर सुशील श्रीवास्तव ने बताया कि नगर पालिका के चयनित वार्ड मेम्बरों ने भी ऐतिहासिक इमारत ढहाने का विरोध नहीं जताया। इन्हीं भी शहर की ऐतिहासिक इमारत धरोहर होती है। पुरानी कोतवाली कर्वों की इमारत भी एक सांस्कृतिक विरासत थी, बड़े दुख का विषय है। इमारत का ढहान, नगर पालिका के लिए डीएम की बात है। किसी व्यापारी संगठन ने भी इसका विरोध नहीं जताया और न आवाज उठाई। नगरवासी खुद देखें कि नगर पालिका उनका



कितना हैतीरी है। लोगों के घर की सीढ़ी जब नगर पालिका गिराती है तो लोग एड़ी-चौटी का जो लगाकर विरोध जताते हैं।

17 से 25 तक होगा टूनार्मेन्ट

चित्रकूट। चित्रकूट चैलेंज कप 2023 17 से 25 दिसंबर तक सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय खेल परिसर में होगा। आयोजन समिति के प्रदायिकरियों ने बताया कि प्रतिवर्ष की भागी इस वर्ष भी चित्रकूट स्पोर्ट्स लॉबल टूनार्मेन्ट महिला-पुरुष का आयोजन कर रहा है। शुभार्ष्म 17 दिसंबर को पूर्वांन 11 बजे व समाप्त 25 दिसंबर को अप्राह्न साढ़े तीन बजे होगा।

जिला जेल में बन्दी की मौतः महिला रोजगार को जिंदा जलाने का था आरोपी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला जेल में हत्या के आरोपी में बन्द जुम्पन की मृत्यु पर परिजनों ने जेल प्रशासन पर मौत की जिम्मेदारी का आरोप लगाया है।

शुक्रवार को जिला जेल में 2018 से बन्द कर्वी कोतवाली क्षेत्र के लोडवारा गांव स्थित कालीनों के जुम्पन की आज जेल में मृत्यु हो गई। उसन 2018 में एक बहुत लाइट मिट्टी की टाल डालकर जिन्दा जला दिया था। इस मामले में वह जेल में निरुद्ध था। उसका मामला कोटों में चल रहा था। जेल अधीक्षक शाखांक पाण्डेय ने बताया कि शुक्रवार को जिम्मेदारी पर लें चारों पांच बजे अवानक उपरान्त तबवत खराब होने पर जेल में डॉक्टरों को सुचना दी गई। जेल में बने अस्तालामें उसे भर्ती कराया। प्राथमिक

हादसे के आरोपी को हुआ 25 सौ का जुमारा अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के पुलिस महानिदेशक के निर्देश में जारी अपरेशन कन्विशन के तहत न्यायालय में लम्बित वारों की पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने के लिए नियमित वार्ड संस्थान के अनुपालन में थानाध्यक्ष भरतकूप सुवेदर विन्द व पैरोकार रामकुपार की पैरवी से न्यायालय ने सड़क हादसे के आरोपी को 25 सौ रुपये के जुमारा से देंदित किया। शुक्रवार को अधिकारी पीपुल कुमार यादव ने बताया कि प्रभावी बहस के चलते सिविल जेल जूनियर डिवीजन सुश्री विठुपी मेहा ने पहाड़ी थाने में दर्ज हादसे के आरोपी चुनीलाल यादव पुत्र भागवत प्रसाद निवासी बेलौन पुरावा रुकमा खुद थाना बिलपुरवा को 25 सौ रुपये के जुमारा से दीड़त किया है।

पत्रकारों से बात करते एसएसपी।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृदा शुक्रता के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में एसएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ मऊ महारकरन सिंह की देवीखोख में थाना मारकुंडी व एसुलालों को टीम ने गरब लोगों का महिला अधीक्षक विवरकर्मा को टीम ने गरब लोगों का लालच देकर जालसाजी का लालच रुपये वसूलने वाले चार लोगों को दबोचा है।

शुक्रवार को अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी ने पत्रकारों को बताया कि प्रभावी बहस के चलते जेलसाजी विवरकर्मा पुत्र महेन्द्र महतो निवासी रींगणिपुरा थाना रींग जिला सीतामाडी बिहार, अरविन्द रजक पुत्र शंकर रजक रेक्ट लोग गरबत जनता व महिलाओं को दबोचा है।

रोजगार का लालच देकर जालसाजी कर लालच रुपये वसूल रहे हैं। पुलिस ने उचित धाराओं में मामला दर्जकर पत्रकारों को बताया कि प्रभावी बहस के चलते निवासी रींगणिपुरा थाना रींग जिला सीतामाडी बिहार, अरविन्द रजक रेक्ट शंकर रजक रेक्ट कर लालच देकर जनता व महिलाओं को दबोचा है।

रोजगार का लालच देकर जालसाजी कर लालच रुपये वसूल रहे हैं। पुलिस ने उचित धाराओं में मामला दर्जकर निवासी खुजरां टीका। जिला औरंगाबाद विहार व बराव व बराव विवरकर्मा पुत्र त्रिवेणी पासवान ने दीपू कालान से दबोच लिया है। पुलिस टीम में थानाध्यक्ष मारकुंडी मीणीप कुमार, दरोगा प्रभाशक्ति रामकुमार और दरोगा अमेवर संकेत व अरोपियों की गिरफ्तारी को मारकुंडी बुलिस को दीपू कालान से दबोच लिया है। पुलिस टीम में थानाध्यक्ष मारकुंडी मीणीप कुमार, दरोगा प्रभाशक्ति रामकुमार और दरोगा अमेवर संकेत व अरोपियों की गिरफ्तारी को मारकुंडी बुलिस को दीपू कालान से दबोच लिया है।

अधीक्षक के निर्देश पर साक्षर बिहार व अनिल रजक पुत्र अग्न मनिवासी खुजरां टीका। जिला औरंगाबाद विहार व बराव व बराव विवरकर्मा पुत्र त्रिवेणी रींगणिपुरा थाना रींग जिला सीतामाडी बिहार, अरविन्द रजक रेक्ट शंकर रजक रेक्ट कर लालच देकर जनता व महिलाओं को दबोचा है।

शुक्रवार को जिला शासकीय अधिकारी विवेश पॉम्से एक्ट त्रिवेणी रींगणिपुरा विवरकर्मा के जुमारा से देंदित किया। जब तक विवेश पॉम्से एक्ट त्रिवेणी रींगणिपुरा विवरकर्मा के जुमारा से देंदित किया जाएगा।

अपरेडे ने देंदित किया।

पत्रकारों से वार्ता करते एसएसपी।

रोजगार का लालच देकर जालसाजी कर लालच रुपये वसूल रहे हैं। पुलिस ने उचित धाराओं में एक्ट वर्क को देकर जालसाजी कर लालच रुपये वसूल रहे हैं। जिला औरंगाबाद विहार व बराव व बराव विवरकर्मा पुत्र त्रिवेणी रींगणिपुरा थाना रींग जिला सीतामाडी बिहार, अरविन्द रजक रेक्ट शंकर रजक रेक्ट कर लालच देकर जनता व महिलाओं को दबोचा है।

अधीक्षक के निर्देश पर साक्षर बिहार व अनिल रजक पुत्र अग्न मनिवासी खुजरां टीका। जिला औरंगाबाद विहार व बराव व बराव विवरकर्मा पुत्र त्रिवेणी रींगणिपुरा थाना रींग जिला सीतामाडी बिहार, अरविन्द रजक रेक्ट शंकर रजक रेक्ट कर लालच देकर जनता व महिलाओं को दबोचा है।

अपरेडे ने देंदित किया।

पत्रकारों से वार्ता करते

